॥ श्री ॥

विद्याभवन राष्ट्रभाषा ग्रन्थमाला

३७

वैदिक व्याकरण

लेखक—

डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय

एम० ए० पी-एच० डी०,

प्राध्यापक, संस्कृत विभाग :

गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-२२१००१

THE
VIDYABHAWAN RASHTRABHASHA GRANTHAMALA
37

VEDIC VYAKARAN

(VEDIC GRAMMAR)

By
Dr. Umesh Chandra Pandey
M. A. Ph. D.
Lecturer in Sanskrit
University of Gorakhpur, Gorakhpur

CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
VARANASI

विषयानुक्रम

अध्याय १ : **वर्ण-विचार** : स्वर, व्यञ्जन, उच्चारण-स्थान, रिफित संज्ञा, नामिसंज्ञा, स्वरभक्ति, ळ तथा ळ्ह। १-४

अध्याय २ : **सन्धि** : स्वरसन्धि, व्यञ्जनसन्धि, विसर्गसन्धि, न कार विकार, स् को ष् परिवर्तन। ५-२२

अध्याय ३ : **संज्ञा व सर्वनाम** : प्रातिपदिक के रूपों की विशेषताएँ। सर्वनाम शब्दों का वर्गीकरण तथा विशेष रूप। २३-२९

अध्याय ४ : **धातु रूप** : 'मूड' या भाव। वर्त्तमान, लिट् लकार, Aorist या लुङ् लकार, भविष्यत् काल। णिजन्त, सन्नन्त, नाम धातु। ३०-४९

अध्याय ५ : **कृदन्त प्रत्यय** ५०-५३

अध्याय ६ : **तद्धित प्रत्यय** ५४-५५

अध्याय ७ : **क्रिया-विशेषण तथा अव्यय** ५६-६२

अध्याय ८ : **स्वर तथा पद-पाठ के नियम** ६३-७२

अनुक्रमणिका : **धातुरूपों के उदाहरणों का संकलन** ७३-७५